खुदाबादी सोनारा सिंधवर्क सोसायटी (रजि.) जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

1869 के आसपास, खुदाबादी सोनारा समुदाय के युवाओं ने सिंध (अब पाकिस्तान) से विदेश जाना शुरू कर दिया और 1930 के दशक तक, हमारे समुदाय के 50 प्रतिशत परिवारों में से कम से कम एक व्यक्ति पांच महाद्वीपों में फैले दुनियां के विभिन्न देशों में अपनी रोजी-रोटी कमा रहे थे। विभाजन के बाद इस समुदाय के अधिकांश परिवार जयपुर में बस गए। जो लोग पहले विदेश गए, और जो बाद में गए, वे सभी जयपुर में एकत्रित होने लगे। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विदेशों से लौटे हमारे समुदाय ने न केवल सिंधी/भारतीय संस्कृति के प्रतिबद्ध थे, बल्कि उन्होंने पश्चिमी संस्कृति और विशिष्ट शैली को अपनाया और वे क्रिसमिस, नव-वर्ष, और अन्य पश्चिमी त्यौहारों को भी मनाते थे। इसके परिणामस्वरूप "सिंधवर्क सोनारा संघ" का गठन हुआ । वर्ष 1953 में मंघनमल लालचंद होतवानी इसके अध्यक्ष बने। बाद में, इसका नाम 1957 में "सिंधवर्क सोनारा सभा" और 1968 में "खुदाबादी सिंधवर्क सोनारा एसोसिएशन कर दिया गया। अंत में सोसायटी को रजिस्ट्रार ऑफ सोसाइटीज राजस्थान के कार्यालय में जरिये रजि. नम्बर 723/84-14 दिनांक 14 मार्च 1985 को "खुदाबादी सोनारा सिंधवर्क सोसाइटी (रजि.)" के नाम से रजिस्टर्ड कराया गया। स्व. श्री नेनुमल पहलाजराय हिंगोरानी के दान से खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट को खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र, प्लाट नम्बर 39, सिंधी कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर में एक कमरा आंवटित किया गया, जो इसका पंजीकृत कार्यालय बन गया। इससे पूर्व इसका कार्यालय जयपुर के गोपाल जी का रास्ता, अचार वालों की गली में स्थित था।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

01. जाति, पंथ और धर्म के किसी भी भेदभाव के बिना, विशेष रूप से सदस्यों के बीच और सामान्य रूप से अन्य समुदायों के साथ प्रेम, एकता और भाईचारे को बढावा देना।
02. सदस्यों के बीच नए विकास, सामाजिक सुधार और पारिवारिक मूल्यों को बढ़ावा देना।
03. व्यवसाय और व्यवसायों में उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखना। प्रत्येक सदस्य के व्यवसाय को प्रतिष्ठित करने के लिए सभी उपयोगी व्यवसायों की उपयोगिता को व्यवस्थित करना, हमारे समुदाय को गौरव एवं सम्मान दिलाने और पूरे दिल से इसकी सेवा करने का अवसर प्रदान करना।
04. गरीब और जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृति या फीस के भुगतान और/या किताबें आदि प्रदान करके शिक्षा को बढ़ावा देना और मदद करना।

...रीब और जरूरतमंद व्यक्तियो को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सा सहायता प्रदान करना।

...लयों, अनाथलयों, निराश्रियों, विधवाओं, शारीरिक रूप से विकलांग और मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए घरों और गरीब और जरूरतमंद व्यक्तियों को उनकी आजीविका के लिए सहायता प्रदान करना।

37. बाढ़, चक्रवात, तूफान, आग और भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं से राहत के लिए सहायता या अन्य सहायता देना।

38. सिंधी कला, संस्कृति, साहित्य और भाषा के विकास और उत्थान को बढ़ावा देना।

39. धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय त्यौहारों एवं दिवसों का आयोजन करना एवं जश्न मनाना।

10. जयपुर में सेवानिवृत सिंधवर्कियों और उन सिंधवर्कियों के लिए जो अपने परिवारों एवं रिश्तेदारों से मिलने आए है, समारोह, पिकनिक और मनोरंजन के अन्य स्त्रोतों का आयोजन करना।

11. अपने सदस्यों को भारत में उनके व्यवसायिक हित के क्षेत्र मे नये विकास से परिचित कराना। विदेश में रहने और काम करने के दौरान या अंततः भारत लौटने पर आप्रवासन और अन्य समस्याओं को हल करने में सहायता करने का प्रयास करना।

12. सदस्यों और समग्र समुदाय के लाभ के लिए, उपरोक्त उद्देश्यों और अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह सब करना आवश्यक है।

हलकाई परिवार से स्व. श्री वेनसीमल शेवकराम, स्व. श्री टेकचंद और स्व. श्री निहालचंद मेठारामानी, ंवराई परिवार से स्व. श्री मेंघोमल नारूमल पुरसवानी और स्व. श्री खेमचंद लालचंद पुरसवानी और श्री ंघोमल खेमचंद वसनानी सिंध से अपना घर छोड कर विदेश जाने वाले पहले लोगों में से थे।

स्व. श्री जेउमल पुरसवानी खुदाबादी सोनारा समुदाय के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने वर्ष 1911 में िलीपींस के मनीला में अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया था। द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर संस्थापक ध्यक्ष स्व. श्री मंघनमल लालचंद होतवानी, जो जापान में कार्य कर रहे थे, उन्हें नेताजी सुभाष चंद्र बोस से लने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो अक्सर जापान का दौरा करते रहते थे। आजाद हिन्द फौज की कई पनीय बैठके जापान के टोकियो स्थित उनके आवास पर होती थी। सोसायटी को अमर शहीद श्री झमटमल खरामदास हसरजानी और अमर शहीद वसुमल पोहूमल हसरजानी (दोनो युवा) पर भी गर्व है, जो मनीला काम करते हुए आजाद हिंद फौज में शामिल हुए और इम्फाल में हमारी भारत माता की मुक्ति के लिए ट्रिश साम्राज्य से लडते हुअे अपने प्राणों की आहुति दे दी।

अतीत में हमारी सोसायटी ने वर्ष 2003 में "कारगिल युद्ध हीरो फंड", "गुजरात भूकंप पीड़ित कोष" और मुख्यमंत्री अकाल फंड" में योगदान किया है। सोसायटी का संचालन एक प्रबंध समिति किया जाता है, जिसमें एक अध्यक्ष और पांच निर्वाचित पदाधिकारी और अध्यक्ष की सहमति से से निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाता है।

सोसायटी ने वर्ष 1978 में स्व. श्री नारायणदास टी. हिंगोरानी की अध्यक्षता में अपनी रजत जयंती 8 फरवरी, 2003 को श्री गंगाराम शामदास पुरसवानी की अध्यक्षता में स्वर्ण जयंती मनाई। इस अवसर मुख्य अतिथि श्री जनार्दन सिंह गहलोत, माननीय खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री एवं पीठासीन अतिथि माननीय न्यायमूर्ति आई.एस. इसरानी, राजस्थान उच्च न्यायालय थे। इस अवसर पर एक स्मारिका विमोचन किया गया और जयपुर में खुदाबादी सोनारा समुदाय और सिंधी समुदाय के गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट, जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

भारत के विभाजन के बाद हमारे खुदाबादी सोनारा समुदाय के अधिकांश परिवार जयपुर में बस गये। 11 अप्रैल 1958 को, हमारे समुदाय के कुछ प्रमुख सदस्यों, जिनके पास सिंधी कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर में अपने भूखण्ड थे, ने एक बैठक की और श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी की अध्यक्षता में सदस्यों के हित एवं उनकी समस्याओं का निराकरण व अधिकारों की रक्षा के एकमात्र उद्देश्य के साथ "**खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन**" नामक एक संघ बनाने का निर्णय लिया। 27 सितम्बर, 1959 को प्लॉट नम्बर 72-73 पर एक आमसभा की बैठक **स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी** की अध्यक्षता में आयोजित की गई, और जिसमें उन्होंने घोषणा की थी वह प्लाट नम्बर 39, स्वेच्छा से एसोसिएशन को दान कर दिया।

खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर ने 21 अक्टूबर, 1960 को स्व. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी की अध्यक्षता में आयोजित आमसभा की बैठक में संपत्ति की हर तरह से देखभाल करने के लिए एक ट्रस्ट स्थापित करने का संकल्प लिया। तदनुसार, 18 नवम्बर, 1965 को एसोसिएशन ने एक ट्रस्ट डीड पंजीकृत किया और निम्नलिखित ट्रस्टियों के साथ "खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट के नाम से जाने जाने वाला एक ट्रस्ट बनाया।

1. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी, अध्यक्ष
2. श्री हेसीमल खूबचंद सावलानी, ट्रस्टी
3. श्री परमानंद मेंघराज सावलानी, ट्रस्टी
4. श्री चंचलदास केशवदास हिंगोरानी, ट्रस्टी
5. श्री गोबिंदराम झामनदास पुरसवानी, ट्रस्टी

उद्देश्य एवं उद्देश्य :

1. खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर के सदस्यों को विवाह, जनेऊ, धार्मिक समारोह और अन्य सामाजिक समारोह के अवसर पर ट्रस्ट सम्पत्ति उपलब्ध कराना।

2. ट्रस्ट सम्पत्ति को किसी भी व्यक्ति को, जो एसोसिएशन का सदस्य नहीं है, समान उद्देश्यों के लिए, ट्रस्ट द्वारा निर्धारित शर्तो पर उपलब्ध कराना।

3. ट्रस्ट सम्पत्ति में कोई सामाजिक संस्था जैसे डिस्पेंसरी, स्कूल और लाईब्रेरी आदि खोलना।

4. कोई अन्य उद्देश्य जैसा कि ट्रस्टी द्वारा समय-समय पर निर्धारित करना ।

एसोसिएशन ने उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक रजिस्टर्ड डीड के जरिये प्लाट नम्बर 39 की भूमि व बने हुए निर्माण का स्वामित्व ट्रस्ट को हस्तांतरित कर दिया। **श्रीमती सावित्री देवी ताराचंद सावलानी** ने अपने पति **स्व. श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी** की स्मृति में एक विवाह-हॉल के निर्माण के लिए बिना किसी नियम और शर्त के स्वैच्छिक योगदान दिया और भूतल पर कमरों का निर्माण 1966 के अंत तक पूरा हो गया। हमारे समुदाय के बहुत से सदस्य आगे आये और विवाह हॉल के निर्माण में कई तरह की सहायता की और इसे वर्ष 1969 मे पूरा किया। वर्तमान में, हॉल बहुत अच्छी तरह से सजाया गया है और एयर कूलिंग सिस्टम से सुसज्जित है और **''श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी विवाह-हॉल''** के प्रसिद्ध रुप में जाना जाता है।

सन् 1997 से ट्रस्ट ने **''श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी विवाह-हॉल''** परिसर के दृष्टिकोण में तेजी से बदलना शुरू किया और योगदान से धन आना शुरू हो गया । कुल मिलाकर, यह एक विशाल विवाह हॉल मय ड्रेसिंग रुम के साथ, दूसरी मंजिल पर एक मिनी हॉल, तीन रसोईघर, एक बैठक कक्ष, अटैच बाथरूम के साथ उन्तीस शयन कक्ष, तीन प्रशासनिक कार्यालय कक्ष (KSAT, KSSS, KSNMS) हैं। यह परिसर वातानुकूलित/वातानुकूलित, तीन ठंडे पेयजल संयंत्र, देवी दुर्गामाता का मंदिर सुंदर ढंग से सुसज्जित है। हमारे सम्मानित बुर्जगों ने इस इमारत की स्थापना की थी और अब यह एक बड़े परिसर में विकसित हो गया

है, जिसमें भूतल, पहली मंजिल, दूसरी मंजिल और एक खुली छत के निर्माण के साथ "**खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र**" के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावा ट्रस्ट हमारे समुदाय के सभी गरीब और जरूरतमंद व्यक्तियों को हर महीने नियमित रूप से वित्तीय सहायता भी देता है। माननीय न्यायमूर्ति आई.एम. इसरानी ने ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष और खुदाबादी सोनारा एसोसियेशन के अध्यक्ष स्व. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी की प्रतिमा का अनावरण 18 दिसम्बर, 1993 को श्री ताराचंद झामनदास तनवानी की अध्यक्षता में बहुत धूमधाम से किया। ट्रस्ट ने पहली बार दीपावली के अवसर पर श्री गंगाराम शामदास पुर्सवानी की अध्यक्षता में एक गेट-टुगेदर का आयोजन किया, जिसमें खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी संगठनों की उप-समितियों सहित प्रबंध समितियों के साथ-साथ वित्तीय योगदानकर्त्ता भी शामिल हुए। ट्रस्ट के बुनियादी ढ़ाचे के विकास के लिए रविवार, 25 नवम्बर 2001 को आमंत्रित एवं सम्मानित किया गया। ट्रस्ट ने श्री गोप रामचंदानी की अध्यक्षता में रंगारंग सास्कृतिक नृत्यों के साथ अपनी स्वर्ण जयंती मनाई, जिसमें दानदाताओं, खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी संगठनों के प्रमुखो और ट्रस्ट के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए वित्तीय योगदान कर्त्ताओं को आमंत्रित किया गया और शुक्रवार, 25 सितम्बर को सम्मानित किया गया एवं शनिवार, 26 सितम्बर 2015 को एक रंगीन स्मारिका का विमोचन किया गया। महान सामुदायिक दूरदर्शी स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी की प्रतिमा का अनावरण ट्रस्ट परिसर में हमारे समुदाय के दिग्गजों को सम्मान और श्रद्धांजलि देने के लिए त्यौहारों के एक भव्य उत्सव के दौरान मुख्य अतिथि श्री मोहन कुंदनदास सोनी, श्री नंदलाल सेउमल पहलवानी की अध्यक्षता में किया गया। इस शुभ, यादगार और ऐतिहासिक घटना की स्मृति में एक आकर्षक और रंगीन स्मारिका "कम्यूनिटी लीजेंड एक्सीलेंस फेस्ट 2016" भी जारी की गई।

11 जनवरी, 2020 को "प्रशस्ति समारोह - आनंदोत्सव 2020" उन दानदाताओं के सम्मान में मनाया गया, जिन्होंने "**खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र**" एवं "**श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी विवाह-हॉल**" के नवीनीकरण में स्वेच्छा से योगदान दिया है, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ प्रदर्शन और संगीत-ए-बहार की शाम, श्री गंगाराम शामदास पुरसवानी की अध्यक्षता में मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री टोपनदास एच. झामनानी ने इस शुभ, यादगार और ऐतिहासिक पर्व की स्मृति में एक आकर्षक और रंगीन स्मारिका जारी की।

संयोग से "**श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी मैरिज हॉल**" ने भी अपने निर्माण की स्वर्ण जयंती पूरी कर ली है (इसका निर्माण 1969 के दौरान पूरा हुआ था और अभी वर्ष 2019 में पूरा किया है) हम श्रीमती सावित्री देवी ताराचंद सावलानी को उनके विवाह-हॉल के निर्माण में योगदान देने के लिए सम्मानित करते है।

खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

भारत के विभाजन के बाद हमारे खुदाबादी सोनारा समुदाय के अधिकांश परिवार जयपुर में बस गये। राजस्थान सरकार के शहरी सुधार ट्रस्ट (यू.आई.टी) जयपुर शहर के बाहरी इलाकों को विकसित करने में रुचि रखती थी। 1952 के आसपास, सिंधी सहकारी हाऊसिंग सोसायटी का गठन स्व. श्री बनाराम की अध्यक्षता में किया गया, जिन्होंने आवास विकास के लिए टी.बी. सेनेटोरियम अस्पताल के पास बनीपार्क में यू.आई.टी. से खाली भूमि का एक बड़ा क्षेत्र मुफ्त में प्राप्त किया था, ताकि सिंधियों के लिए दो/तीन वर्षों के भीतर आवासीय मकान बनाए जा सके। जयपुर में रहने वाले कई सिंधियों की तरह, खुदाबादी सोनारा समुदाय के 150 परिवार सोसायटी के शेयर होल्डर (100 रुपये प्रति शेयर) बन गए। प्रत्येक शेयरधारक को दो साल के भीतर अपने आवासीय मकान विकसित करने की शर्त के तहत लगभग 500 वर्गगज भूमि का एक भूखण्ड़ आवंटित किया गया था। प्रत्येक शेयर होल्डर/भूखण्ड़ आवंटी को रुपये देने का वादा किया गया था। निर्माण के चरणों में उन्हें 3400/- रुपये (विकास शुल्क के लिए 600/- रुपये से कम) का भुगतान ऋण के रुपये में किया जाएगा, जिसे बीस वर्षो तक प्रतिमाह 20/- रुपये की अदागयी में वापिस किया जाएगा। व्यक्तिगत धन की कमी के कारण, हमारे समुदाय के केवल कुछ परिवार ही अपने आवासीय घर बनाने में सक्षम थे। सोसायटी ने दो साल के भीतर आवासीय मकानों का निर्माण न करने पर भूखण्ड़ का आवंटन रद्द करने की धमकी दी। खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन की स्थापना 11 अप्रैल, 1958 को **श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी** की अध्यक्षता में बनीपार्क, जयपुर के दूरदर्शी खुदाबादी सोनारा प्लॉट मालिकों के एक समूह द्वारा की गई ताकि सदस्यों के हितो की रक्षा करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना। वे सभी खुदाबादी सोनारा जिनके पास बनीपार्क में अपने भूखण्ड़ या फ्लैट थे, इसके सदस्य बन गए।

27 सितम्बर, 1959 को प्लॉट नम्बर 72-73 पर एक आमसभा की बैठक **स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी** की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें 21 (इक्कीस) सदस्य उपस्थित थे और जिसमें उन्होंने घोषणा की थी वह प्लाट नम्बर 39, जो काफी समय पहले उन्होंने मंगूमल किमतराय गनवानी से खरीद किया था, स्वेच्छा से एसोसिएशन को दान कर दिया। इसके अलावा, उसी बैठक में, एसोसिएशन का नाम "**खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन**" की औपचारिक रूप से पुष्टि की गई। एसोसिएशन का गठन निम्नलिखित लक्ष्यों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

01. अपने अधिकारों और वैध हितों की रक्षा के लिए सदस्यों को एकजुट करना और उनका प्रतिनिधित्व करना।

02. खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी संगठनों की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना।

03. सामान्य रूप से गैर सोनारा समुदाय और विशेष रूप से बनीपार्क के लोगों का संगठन के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखना।

04. सिंधी कला, संस्कृति, साहित्य, भाषा और कल्याणकारी गतिविधियों में विकास और उत्थान को प्रोत्साहित करना।

05. समग्र रूप से समुदाय के सदस्यों के लाभ के लिए विशेष रूप से उपरोक्त उद्देश्यों और अन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी प्रयत्न करना।

21 अक्टूबर, 1960 को प्लॉट नम्बर 39 पर "भूमि-पूजन" के बाद, स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी ने घोषणा की सोसायटी ऋण के 3,400/- रुपये और प्लॉट नंबर 39 की अतिरिक्त भूमि की लागत, कुल 4363/- रुपये उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति के सरकारी बांड के साथ दो कमरों के निर्माण की राशि को उनका व्यक्तिगत दान माना जाना चाहिये। इस समारोह के साथ, हमारे समुदाय का हैदराबाद, सिंध में आयोजित एक विवाह हॉल के लिए अपनी जगह का सपना वास्तविक बन गया। विभाजन के बाद बड़ी संख्या में हमारे समुदाय के सदस्य जयपुर में बस गए और एक इमारत का मालिक होना हमारे समुदाय के लिए खुशी और गर्व की बात थी। खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर ने 21 अक्टूबर को स्व. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी की अध्यक्षता में आयोजित आम सभा की बैठक में सम्पत्ति की हर तरह से देखभाल करने के लिए **"खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट"** के नाम से एक ट्रस्ट स्थापित करने का संकल्प लिया। 1960 में अधिवक्ता स्व. श्री सिरूमल इसरानी से परामर्श कर, 24 जनवरी 1950 के अध्यादेश संख्या 4 के तहत राजस्थान राज्य में अपनाए गए भारतीय पंजीकरण अधिनियम एक्ट 1908 की धारा 51 के तहत 18 नवम्बर, 1965 को ट्रस्ट डीड का पंजीकरण किया गया।

ट्रस्ट की सदस्यता के लिए निम्नलिखित ट्रस्टी चुने गए :

1. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी, अध्यक्ष
2. श्री वेंसीमल खूबचंद सावलानी, ट्रस्टी
3. श्री परमानंद मेंघराज सावलानी, ट्रस्टी
4. श्री चंचलदास केशवदास हिंगोरानी, ट्रस्टी
5. श्री गोबिंदराम झामनदास पुरसवानी, ट्रस्टी